श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - ८ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा ८६ से ९५**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. १-२-२०२२

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न : १ नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर शोर्टमें दिजीये। १०

(१) बाह्य वेष मोक्षका कारण क्यों नहीं है ?

(२) आत्मा और शरीरके संयोग सम्बन्धका भेद नहीं जाननेवालेको किसका भ्रम वर्तता है ?

(३) अव्रत अवस्थामें हिंसादि पापोंके जो विकल्प होते है उसका नाश किस प्रकार करना ?

(४) रागकी उत्पत्तिका कारण क्या है ?

(५) जो पुरुष आत्महितकी प्रवृत्तिमें प्रवर्तता है वह पुरुष उस विषयोंसे च्युत क्यों नहीं होता है ?

प्रश्न–२ : कौंसमें दिये गये विकल्पमेंसे सही विकल्पसे रिक्तस्थानकी पूर्ति कीजिये। १०

(१) जिन्हें उत्तम स्वरूप, संवेदनमें विकसित होता जाता है उन्हें इन्द्रिय विषयोंके प्रति ..... का भाव प्रवर्तता है।
(लीनता, उदासीनता, सुखबुद्धि)

(२) जबतक यथाख्यात चारित्र नहीं होता तब तक ज्ञानीको दो धारा रहती है, शुभाशुभ कर्मधारा और .....
(शुद्धधारा, अशुद्धधारा, ज्ञानधारा)

(३) अट्ठाईस मूलगुण आदि बाह्यलिंगसे ..... होता है ऐसी मान्यता वह मिथ्यादृष्टि है। (मोक्ष, पुण्य, संसार)

(४) शरीर और आत्माके संयोग सम्बन्धके कारण अज्ञानीको भ्रम होता है कि शरीरकी क्रिया ..... करता है ।
(पुद्गल, कर्म, जीव)

(५) ज्ञानीको आत्मस्वरूपके दृढ़तर अभ्यासके कारण ज्ञानचेतनाका परिणमन होनेसे कर्म ..... करता है ।
(निर्जरा, बंध, उदीरणा)

प्रश्न–३ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके सही उत्तर एक ही शब्दमें दिजीये । **१०**

(१) निमित्त होने पर भी, निमित्तसे निरपेक्ष किसका परिणमन होता है ? .....

(२) आत्मा और शरीरका एकक्षेत्रावगाह सम्बन्ध होने पर भी कौनसे लक्षणसे आत्मा पहिचाना जाता हैं ? .....

(३) संयम को धरनेवाले भी किसके वश होकर विषय भोगमें प्रीति करते है ? .....

(४) लिंग की भांति क्या देहाश्रित है ? .....

(५) अंतरंग वीतराग स्वरूप आत्माके धर्म बिना बाह्य वेषमात्रसे धर्मकी संपत्तिरूप किसकी प्राप्ति होती नहीं है ?.....

प्रश्न–४ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर 'हा' अथवा 'नहीं'में दिजीये । **१०**

(१) सभी शास्त्रोंको जानेवाला भी भेदविज्ञानके अभावसे मुक्तिको प्राप्त होता नहीं है । .....

(२) मात्र लिंग सम्बन्धीका विकल्प आत्मसाधनामें बाधक बनता नहीं है । .....

(३) आगममें जाति और लिंगसे भी मोक्ष हो ऐसा प्रतिपादन किया है । .....

(४) शरीरकी गति और आत्माके बीच निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध है । .....

(५) बहिरात्मा शरीरको चेतना रहित जड और आत्माको ज्ञान-दर्शन स्वरूप ही समझते है । .....

प्रश्न : ५ नीचे दिये गये कोई भी एक विषय पर निबंध लिखें । **१०**

(१) अंतरात्माको कौनसी अवस्था भ्रांतिरूप भासित नहीं होती उस द्वारा उसकी परिणति सम्बन्धित संक्षिप्तमें दर्शायें ।

(२) शरीरमें आत्मबुद्धि रखनेवालेका पररूपधारण आत्मज्ञान शून्य शास्त्रज्ञान बोझारूप क्यों हैं उस सम्बन्धमें संक्षिप्तमें लिखे ।

(३) व्रत-अव्रतरूप इन विकल्पोंसे रहित उदासिन वीतराग शुद्धोपयोग वह मोक्षमार्ग है, उनका वैचारिक विवरण किजीये ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र–८ के उत्तरपत्र ता. १०-३-२०२२ तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।